Bundelkhand Journal of Academic Research

भारत के आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रदर्शन का अध्ययन

डॉ. मुकेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र), गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश
(**Corresponding Author:** mukeshkumaralld@gmail.com)
https://doi.org/10.5281/zenodo.21787693

सारांश

भारत विविधता और प्रगति का एक फलता–फूलता संगम है और 1.4 अरब से अधिक आबादी के साथ, यह दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। जैसे ही हम 2024–25 के गतिशील वर्ष में प्रवेश करते हैं, भारत की सकल धरेलु उत्पाद 4 ट्रिलियन अमेरिकी डालर को पार करने के लिए तैयार है, जिससे वैश्विक स्तर पर पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में इसकी स्थिति मजबूत हो जाएगी। सकल धरेलु उत्पाद मे असाधारण वृद्धि, जिसका इस वर्ष 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है, चीन को भी पीछे छोड़ देती है, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुमानों के अनुसार, यह भारत के लिए 2027 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का मार्ग प्रशस्त करती है। इस आर्थिक उत्थान को रणनीतिक सुधारों से बल मिल रहा है, जो भारत को निवेश के लिए एक सुरक्षित और आकर्षक स्थान में बदल रहे हैं। हाल के वर्षो में सरकार के अनेक उदारवादी पहलो में विदेशी निवेश पर लगी पाबंदियों को उदार बनाना, श्रम और दिवालियापन कानूनों का आधुनिकीकरण करना, और राष्ट्रीय वस्तु एवं सेवा कर लागू करना शामिल है, इन प्रयासो और आत्मनिर्भरता के प्रति प्रतिबद्धता ने भारत को वैश्विक निवेशकों के लिए एक आशाजनक गंतव्य के रूप में स्थापित किया है। 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद से भारत में निवेश का माहौल काफी बेहतर हुआ है। वित्त वर्ष 2022 में, भारत ने 83.6 बिलियन अमेरिकी डालर का रिकॉर्ड विदेशी निवेश आकर्षित किया, जो निवेशकों के लिए इसकी आकर्षण क्षमता का एक प्रमाण है। देश अब 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस'(व्यापार करने में आसानी) सूचकांक में शीर्ष 100 देशों में गर्व से खड़ा है। पिछले 25 वर्षों में, कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह 953.14 बिलियन अमेरिकी डालर तक पहुँच गया है, जिसमें से लगभग 65 प्रशितत हिस्सा पिछले 9 वर्षों मे प्राप्त हुआ। भारत में आर्थिक विकास को बढ़ाने में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ने अहम भूमिका निभाई है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का मतलब है किसी देश की घरेलू अर्थव्यवस्था में विदेशी संस्थाओं, जैसे कंपनियों या लोगों द्वारा किया गया निवेश। इस शोध पत्र मे यह अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन से पता चलता है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और आर्थिक विकास के बीच धनात्मक संबंध है।

आलेख सूचना			
	प्राप्त: 21 अप्रैल, 2026	**स्वीकृत:** 04 मई, 2026	**प्रकाशित:** 30 जून, 2026
	सारणी: 05	**चित्र एवं ग्राफ:** 01	**स्रोत एवं संदर्भ:** 17
	मुख्य शब्द: आर्थिक विकास, एफडीआई, जीडीपी, सार्वजनिक–निजी भागीदारी।		

1. परिचय एवं पृष्ठभूमि : किसी फर्म या व्यक्ति द्वारा एक देश से दूसरे देश में किए गए निवेश को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कहा जाता है। इसमें किसी विदेशी देश में कंपनी की एक्टिविटी शुरू करना या एसेट्स खरीदना शामिल है, जिसका मकसद निवेश की गई कंपनी पर कंट्रोल या बड़ा असर पाना होता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश निवेशक को किसी विदेशी देश में अपने निवेश पर ओनरशिप और कंट्रोल रखने की इजाजत देता है। यह पूरी तरह से ओन्ड सब्सिडियरी बनाने, लोकल पार्टनर्स के साथ जॉइंट वेंचर बनाने, या किसी मौजूदा कंपनी में बड़ी हिस्सेदारी खरीदने के रूप में हो सकता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की पहचान आमतौर पर लॉन्ग–टर्म निवेश से होती है, क्योंकि निवेशक अपने रिसोर्स और एक्सपर्टीज को विदेशी मार्केट में लगाते हैं। यह लॉन्ग–टर्म नजरिया होस्ट देश में स्टेबल इकोनॉमिक ग्रोथ और सस्टेनेबल डेवलपमेंट में मदद कर सकता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश होस्ट देश में पूँजी तकनीक और स्किल्स लाता है।

विदेशी निवेशक अक्सर एडवांस्ड प्रोडक्शन टेक्नीक, मैनेजेरियल प्रैक्टिस और टेक्निकल जानकारी लाते हैं जो लोकल इंडस्ट्रीज में प्रोडक्टिविटी और कॉम्पिटिटिवनेस को बेहतर बना सकती हैं। नॉलेज और टेक्नोलॉजी के इस

ट्रांसफर का घरेलू अर्थव्यवस्था पर पॉजिटिव असर पड़ सकता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के जरिए होस्ट देश में रोजगार के मौके बनाए जा सकते हैं। जैसे–जैसे विदेशी कंपनियाँ अपना काम शुरू करती हैं या अपने मौजूदा बिजनेस को बढ़ाती हैं, वे लोकल वर्कफोर्स के लिए नौकरियाँ पैदा करती हैं। इससे बेरोजगारी दर कम करने और जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश होस्ट देश में आर्थिक विकास और तरक्की में मदद कर सकता है। विदेशी पूजी, तकनीक और स्किल्स के आने से निवेश को बढ़ावा मिल सकता है, उत्पादन क्षमता और उत्पादकता बढ़ सकती है। इससे आउटपुट बढ़ सकता है। इससे निर्यात और आर्थिक विकास को बढ़ाने मदद होती है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश होस्ट देशों को ग्लोबल मार्केट और सप्लाई चेन तक पहुँच दे सकता है। विदेशी निवेशक के पास अक्सर डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क, मार्केटिंग एक्सपर्टीज और इंटरनेशनल कनेक्शन होते हैं, जो लोकल बिजनेस को अपनी पहुँच बढ़ाने और ग्लोबल ट्रेड में हिस्सा लेने में मदद कर सकते हैं। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश होस्ट देश में इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास में मदद कर सकता है। विदेशी निवेशक इनमें निवेश कर सकते ह। दूरसंचार, परिवहन, ऊर्जा और शहरी विकास जैसे क्षेत्र, जो समग्र बुनियादी ढांचे में सुधार कर सकते हैं और आर्थिक गतिविधियों को सहायता प्रदान कर सकते हैं।

1.2 अध्ययन के उद्देश्यः

1. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह और भारत की आर्थिक वृद्धि के बीच के संबंध की जाँच करना।
2. भारत में देश–वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह का पता लगाना।
3. भारत में क्षेत्र–वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह को मापना।

2. साहित्य की समीक्षा : माथा और मथियाझगन (2005) ने अपने अध्ययन मे पाया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह का आर्थिक विकास पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। अब्दुल हामिद सुकर (2007) ने पाया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का आर्थिक विकास पर नगण्य रूप से सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एलेना पेलिनेस्कु और मैग्डालेना राडुलेस्कु (2009) ने पाया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का विकसित और विकासशील, दोनों तरह के देशों के आर्थिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह और प्रति व्यक्ति सकल धरेलु उत्पाद वृद्धि के बीच का संबंध प्रत्यक्ष और महत्वपूर्ण पाया गया है। भव्या मल्होत्रा (2014) ने पाया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का भारतीय अर्थव्यवस्था पर वास्तव में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह कई ऐसे लाभ लाता है जो भारत के आर्थिक विकास में योगदान देते हैं। इसके अलावा, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह घरेलू पूंजी की पूर्ति करने, प्रौद्योगिकी और कौशल हस्तांतरण, रोजगार सृजन और नौकरी के अवसर, तथा ज्ञान और कौशल वृद्धि में सहायता करता है।

कार्लोस एनसिनास फेरर और अन्य (2015) ने अपने अध्ययन मे पाया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह सकल धरेलु उत्पाद की वृद्धि को काफी हद तक प्रभावित करता है। खामिस हरेब और अन्य (2015) ने पाया कि मुद्रास्फीति का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता है। इसका अर्थ है कि मुद्रास्फीति की दरों में होने वाले बदलाव, देखी गई सीमा के भीतर, विदेशी निवेशकों के मेजबान देश में निवेश करने के निर्णय को प्रभावित करते हुए प्रतीत नहीं होते हैं। नलैंडू मामिंगी और करीम मार्टिन (2018) ने पाया कि बुनियादी ढांचे के विकास, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और घरेलू निवेश के बीच का संबंध विभिन्न देशों, क्षेत्रों और आर्थिक संदर्भों में अलग–अलग हो सकता है। भावना कुन्नप्पिल्ली शंकरन (2019) ने पाया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज सेंसेक्स और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज सेंसेक्स के शेयरों की कीमतों को बढ़ाता है। वालिद अली (2019) ने निर्धारित किया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अल्पकालिक और दीर्घकालिक, दोनों तरह के आर्थिक विकास पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। नवीन कुमार शर्मा और अन्य (2019) ने पाया कि भारत के दो मुख्य शेयर बाजार सूचकांक, सेंसेक्स और निफ्टी, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से सीधे तौर पर प्रभावित होते हैं। उन्होंने आगे यह निष्कर्ष निकाला कि भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह भारतीय शेयर बाजार के रुझान को निर्धारित करता है।

सुसिक और अन्य, (2019) ने यह निर्धारित किया कि विदेशी पूंजी के प्रवाह को आर्थिक विकास को गति देने के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता माना जाता है और इसका आर्थिक विकास पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। विदेशी पूंजी के विभिन्न रूपों, जैसे कि विदेशी निवेशकों के साथ संयुक्त उद्यम और मुक्त क्षेत्रों में निवेश, की निगरानी और जांच से यह पता चला है कि अर्थव्यवस्था में व्यापक आर्थिक कारकों पर इसके कितने विविध और अनुकूल प्रभाव पड़ते हैं। जिन वांग और अन्य, (2019) ने पाया कि शेयर बाजार का विकास प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह से काफी हद तक प्रभावित होता है।

सास्वता चौधरी और अन्य, (2020) ने पाया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का क्षेत्र–वार प्रवाह समग्र आर्थिक विकास में सहायता करता है। लीना बकावदाह और ताहर तायाची, (2021) ने पाया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का वास्तव में प्रतिभूति बाजारों की उन्नति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिकियान वांग, (2021) ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और शेयर बाजार सूचकांक के बीच नकारात्मक सहसंबंध पाया। अभय प्रताप सिंह और अन्य, (2022) ने पाया

कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में विदेशी कंपनियों द्वारा मेजबान देश में पूंजी का प्रत्यक्ष निवेश शामिल होता है। पूंजी का यह प्रवाह उत्पादक संपत्तियों, जैसे कि कारखानों, में निवेश बढ़ाकर आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकता है। पूंजी निवेश में वृद्धि से उत्पादकता, रोजगार सृजन और समग्र आर्थिक विस्तार के उच्च स्तर प्राप्त हो सकते हैं। मोहम्मद जैन खान और राणा जहरा मसूद (2022) ने पाया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और विदेशी संस्थागत निवेश किसी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को अक्सर अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है और इसे विकास का इंजन कहा जाता है। साई रोहित कुमार रेड्डी बोब्बा (2022) ने यह बताया कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का भारतीय शेयर बाजारों के विकास और अस्थिरता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

2.1. अनुसंधान अंतरालः भारत के आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभाव से संबंधित मौजूदा साहित्य के बावजूद, इसमें कई ऐसे अनुसंधान अंतराल हो सकते हैं जिनकी आगे अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है। इस अध्ययन का उद्देश्य भारत में देश–वार और क्षेत्र–वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह की जाँच करके, तथा बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और सकल धरेलु उत्पाद की वृद्धि पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभाव का विश्लेषण करके, इस अनुसंधान अंतराल को भरना है। यह अध्ययन इस बात को स्वीकार करता है कि भारतीय संदर्भ में विशेष रूप से इन पहलुओं पर केंद्रित मौजूदा अध्ययनों की संख्या सीमित है।

3. अनुसंधान पद्धति : इस अध्ययन का उद्देश्य 2000–01 से 2025–26 की 25 वर्ष की अवधि के दौरान, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का भारत के विकास पर पड़ने वाले प्रभावों के परिणामों का मूल्यांकन करना है। इस अध्ययन में एक वर्णनात्मक अनुसंधान डिजाइन का उपयोग किया जाएगा, और इसका मुख्य आधार द्वितीयक आकड़ों के विश्लेषण पर होगा। द्वितीयक आकड़ों को मुख्य रूप से भारतीय रिजर्व बैंक की वार्षिक रिपोर्टों, व अन्य सरकारी दस्तावेजों, अकादमिक लेखों और 2000–01 से 2025–26 के वर्षों के दौरान वित्तीय संस्थानों द्वारा तैयार की गई प्रतिष्ठित रिपोर्टों से एकत्र किया गया है।

3.1. समस्या का विवरणः भारत के आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रभाव एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दिलचस्पी का विषय है। हालाँकि, इस बात पर आम सहमति है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आर्थिक विकास में सकारात्मक योगदान दे सकता है, फिर भी वह विशिष्ट प्रकृति, परिमाण और वे माध्यम जिनके द्वारा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भारतीय आर्थिक विकास को प्रभावित करता है, अभी भी शोध के विषय बने हुए हैं। इसलिए, इस अध्ययन में जिस समस्या का समाधान किया जाना है, वह है भारत के आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के बीच संबंध की जाँच और विश्लेषण करना। यह अध्ययन निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने के लिए किया गया हैः प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और भारत के आर्थिक विकास के बीच क्या संबंध है? क्या भारत में आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ता है?

3.2. अध्ययन का दायराः यह अध्ययन मॉरीशस, सिंगापुर, अमेरिका, नीदरलैंड, जापान, जर्मनी, युनाइटेड किगंडम आइलैंड, सयुक्त अरब अमीरात और साइप्रस जैसे चुनिंदा देशों से भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह को मापता है। इसके अलावा, इस अध्ययन में भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के क्षेत्र–वार प्रवाह का भी अध्ययन किया गया है।

3.3. अध्ययन का महत्वः भारत के आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभाव का अध्ययन नीति–निर्माताओं, निवेशकों और शोधकर्ताओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह आर्थिक विकास, क्षेत्रीय विकास और समग्र आर्थिक प्रदर्शन को बढ़ावा देने में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की भूमिका के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष नीतिगत निर्णयों को सूचित कर विदेशी निवेश को आकर्षित कर भारत के सतत आर्थिक विकास में योगदान दे सकते हैं। भारत के आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभाव का अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। भारत के आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभाव को समझने से नीति–निर्माताओं को विदेशी निवेश को आकर्षित करने और बढ़ावा देने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ बनाने में मदद मिलती है। उन क्षेत्रों और देशों की पहचान करके जो प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, नीति–निर्माता उन क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए लक्षित नीतियाँ विकसित कर सकते हैं।

यह अध्ययन प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह को बढ़ाने और आर्थिक विकास पर उनके सकारात्मक प्रभाव के लिए आवश्यक नीतिगत उपायों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकता है। मेजबान देशों में आर्थिक विकास को गति देने में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत के आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभाव का आकलन करने से यह समझने में मदद मिलती है कि विदेशी निवेश विकास के विभिन्न पहलुओं में कैसे योगदान देता है, जैसे कि पूंजी निवेश बढ़ाना, रोजगार के अवसर पैदा करना, प्रौद्योगिकी और ज्ञान का हस्तांतरण करना और उत्पादकता को बढ़ावा देना। यह ज्ञान नीति–निर्माताओं को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाने में मार्गदर्शन कर सकता है, ताकि इसके विकासात्मक लाभों को अधिकतम किया जा सके। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के क्षेत्र–वार विश्लेषण पर अध्ययन का फोकस उन विशिष्ट उद्योगों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता

है जो विदेशी निवेश को आकर्षित करते हैं। उच्च प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह वाले क्षेत्रों और आर्थिक विकास पर उनके प्रभाव की पहचान करने से नीति–निर्माताओं को निवेश को प्राथमिकता देने और उन क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देने के लिए लक्षित नीतियाँ लागू करने में मदद मिलती है। इससे अर्थव्यवस्था के आगे के विकास और विविधीकरण के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान करने में भी मदद करता है।

भारत के आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभाव का एक व्यापक अध्ययन निवेशकों का विश्वास बढ़ाता है। जब संभावित निवेशकों के पास प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और आर्थिक विकास के बीच सकारात्मक संबंध के बारे में शोध–समर्थित जानकारी उपलब्ध होती है, तो इससे भारत में निवेश करने की उनकी इच्छा बढ़ सकती है। इससे विदेशी पूंजी का अधिक प्रवाह हो सकता है, जो आर्थिक विकास और प्रगति को गति प्रदान कर सकता है। विभिन्न देशों और क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभाव की तुलना करना बहुमूल्य मानदंड और अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। अन्य देशों की तुलना में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित करने और आर्थिक विकास के लिए उसका लाभ उठाने में भारत कैसा प्रदर्शन करता है, इसकी जांच करके, नीति–निर्माता सर्वोत्तम प्रथाओं और सुधार के क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं। तुलनात्मक विश्लेषण उन अद्वितीय कारकों को समझने में भी मदद कर सकता है, जो प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए एक गंतव्य के रूप में भारत के आकर्षण में योगदान करते हैं। यह अध्ययन प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और आर्थिक विकास से संबंधित मौजूदा अकादमिक शोध के भंडार में योगदान देता है। यह ऐसे अनुभवजन्य प्रमाण और मात्रात्मक विश्लेषण प्रदान करता है, जो प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और भारत की आर्थिक वृद्धि के बीच के संबंध की समझ को और अधिक समृद्ध कर सकते हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष उन शोधकर्ताओं, अर्थशास्त्रियों और विद्वानों के लिए एक मूल्यवान संदर्भ के रूप में काम आ सकते हैं, जो प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और इसके प्रभावों का अध्ययन करने में रुचि रखते हैं।

3.4. अध्ययन की सीमाएँ : द्वितीयक आकड़ों पर आधारित कोई अध्ययन करते समय, कई ऐसी सीमाएँ होती हैं जिन पर विचार किया जाना चाहिए। द्वितीयक आकड़ों के स्रोतों की विश्वसनीयता और सटीकता अलग–अलग हो सकती है। यह सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है कि वेबसाइटों, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों से इकट्ठा किया गया आकड़ां प्रतिष्ठित और आधिकारिक स्रोतों से लिया गया हो। आकड़ों में गलतियाँ, विसंगतियाँ या पूर्वाग्रह हो सकते हैं, जो अध्ययन के निष्कर्षों की वैधता पर असर डाल सकते हैं। आकड़ों की उपलब्धता एक सीमित करने वाला कारक हो सकती है। जिन स्रोतों का इस्तेमाल किया गया है, उनके आधार पर आकड़ों की व्यापकता और गहराई में सीमाएँ हो सकती हैं। कुछ खास चर या समय की खास अवधियों के लिए आकड़ों सीमित या अधूरा हो सकता है, जिससे विश्लेषण या निष्कर्षों के सामान्यीकरण में रुकावट आ सकती है। द्वितीयक आकड़ों के स्रोतों में अंतर्निहित पूर्वाग्रह या व्यक्तिपरक व्याख्याएँ हो सकती हैं। वेबसाइटों, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों से इकट्ठा किया गया आकड़ों मूल स्रोतों के दृष्टिकोण या एजेंडे को दर्शा सकता है। शोधकर्ताओं को आकड़ों की व्याख्या और विश्लेषण करते समय सावधानी बरतनी चाहिए, और उन संभावित पूर्वाग्रहों पर विचार करना चाहिए जिन्होंने इसके संग्रह या रिपोर्टिंग को प्रभावित किया हो।

4. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह और आर्थिक विकास : भारत की अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और आर्थिक वृद्धि दर का संबंध महत्वपूर्ण और प्रायः सकारात्मक रहा है। वर्ष 2000–01 से 2007–08 के बीच भारत ने उच्च आर्थिक वृद्धि का अनुभव किया, जहां आर्थिक वृद्धि दर लगभग 7 प्रतिशत से 9 प्रतिशत के बीच रही। इसी अवधि में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी लगातार बढ़कर लगभग 3 प्रतिशत तक पहुंच गया। यह स्पष्ट संकेत देता है कि जब अर्थव्यवस्था मजबूत होती है और नीतिगत स्थिरता रहती है, तो विदेशी निवेशकों का विश्वास बढ़ता है और वे अधिक निवेश करते हैं। वर्ष 2008–09 में वैश्विक आर्थिक मंदी का प्रभाव भारत पर भी पड़ा। आर्थिक वृद्धि दर घटकर 6.7 प्रतिशत हो गई और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी गिरकर 1.48 प्रतिशत रह गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वैश्विक परिस्थितियां भी भारत में निवेश और विकास को प्रभावित करती हैं। हालांकि, 2009–10 और 2010–11 में अर्थव्यवस्था ने तेजी से सुधार किया, और 2010–11 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 3.62 प्रतिशत के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया, जबकि आर्थिक वृद्धि दर 8.4 प्रतिशत रही।

वर्ष 2011–12 से 2013–14 के बीच भारत की आर्थिक वृद्धि दर में गिरावट आई और यह 5 प्रतिशत से 6 प्रतिशत के बीच रही। इस दौरान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी अपेक्षाकृत कम (लगभग 1.3 व 1.5 प्रतिशत रहा। इसका कारण नीतिगत अनिश्चितता, भ्रष्टाचार के आरोप और वैश्विक आर्थिक सुस्ती मानी जा सकती है। इसके बाद 2014–15 से 2016–17 के बीच सरकार द्वारा किए गए आर्थिक सुधारों जैसे मेक इन इंडिया और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के कारण आर्थिक वृद्धि दर फिर से 7–8 प्रतिशत तक पहुंच गई और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी 3 प्रतिशत से अधिक हो गया। वर्ष 2019–20 और विशेष रूप से 2020–21 में कोविड–19 महामारी के कारण अर्थव्यवस्था को बड़ा झटका लगा। 2020–21 में आर्थिक वृद्धि दर 7.3 प्रतिशत तक गिर गई, जो एक गंभीर आर्थिक संकुचन को दर्शाती

है। इस दौरान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी घटकर 1.03 प्रतिशत रह गया। हालांकि, 2021–22 में अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ और आर्थिक वृद्धि दर 7 प्रतिशत तथा मे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 2.41 प्रतिशत तक पहुंच गया। जैसा कि सारणी–1 से स्पष्ट है।

सारणी–1: पिछले 25 वित्तीय वर्षो मे एफडीआइ और जीडीपी वृद्धि दर (2000–01 से 2025–26)

वित्तीय वर्ष	*एफडीआइ (जीडीपी के प्रतिशत के रूप में शुद्ध अंतर्प्रवाह)*	*जीडीपी वृद्धि दर (वार्षिक प्रतिशत)*
2000-01	*0.77*	*4.0*
2001-02	*1.06*	*4.9*
2002-03	*1.01*	*3.9*
2003-04	*0.61*	*7.9*
2004-05	*0.77*	*7.50*
2005-06	*0.89*	*9.30*
2006-07	*2.13*	*9.30*
2007-08	*2.07*	*9.30*
2008-09	*3.62*	*6.70*
2009-10	*2.65*	*8.50*
2010-11	*1.64*	*8.40*
2011-12	*2.00*	*6.20*
2012-13	*1.31*	*5.50*
2013-14	*1.52*	*6.70*
2014-15	*1.70*	*7.40*
2015-16	*2.09*	*8.00*
2016-17	*1.94*	*8.30*
2017-18	*1.51*	*7.00*
2018-19	*1.56*	*6.70*
2019-20	*1.78*	*4.20*
2020-21	*2.41*	*-7.3*
2021-22	*1.41*	*7.00*
2022-23	*1.49*	*6.90*
2023-24	*0.77*	*7.50*
2024-25	*0.71*	*6.5*
2025-26	*0.17*	*7.4*

Sources: https://apiardata.com, World Bank.

हाल के वर्षों (2023–24 से 2025–26) में एक अलग प्रवृत्ति देखने को मिलती है। आर्थिक वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत से 7.5 प्रतिशत के बीच स्थिर बनी हुई है, लेकिन प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में उल्लेखनीय गिरावट आई है और यह 0.10 प्रतिशत से 0.28 प्रतिशत के बीच रह गया है। इससे यह संकेत मिलता है कि अब भारत की आर्थिक वृद्धि केवल विदेशी निवेश पर निर्भर नहीं है, बल्कि घरेलू निवेश, सरकारी व्यय और आंतरिक मांग भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अंततः, यह कहा जा सकता है कि भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और आर्थिक वृद्धि दर के बीच सामान्यतः सकारात्मक संबंध है, लेकिन यह पूर्णतः निर्भरता नहीं दर्शाता। हाल के वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था अधिक आत्मनिर्भर और विविध स्रोतों पर आधारित होती जा रही है, जो इसकी दीर्घकालिक स्थिरता के लिए सकारात्मक संकेत है।

5.1. भारत में वर्ष–वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह : भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आर्थिक विकास और उन्नति का एक महत्वपूर्ण चालक रहा है। पिछले कुछ वर्षों में, भारत ने विभिन्न देशों से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का भारी प्रवाह आकर्षित किया है। नीचे दी गई तालिका 2000 और 2025 के बीच भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का एक अवलोकन प्रस्तुत करती है।

वर्ष 2000–01 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मात्र 4,029 मिलियन अमेरिकी डॉलर था, जो बढ़कर 2024–25 में 80,615 मिलियन डॉलर तक पहुँच गया। प्रारंभिक वर्षों (2000–05) में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का स्तर कम और अस्थिर रहा, जिसका मुख्य कारण नीतिगत स्पष्टता की कमी और आर्थिक सुधारों का प्रारंभिक चरण था। 2005–08 के दौरान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में तीव्र वृद्धि हुई, विशेषकर 2006–07 में 155 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो भारत की मजबूत आर्थिक स्थिति, उदारीकरण नीतियों और वैश्विक निवेशकों के बढ़ते विश्वास को दर्शाती है।

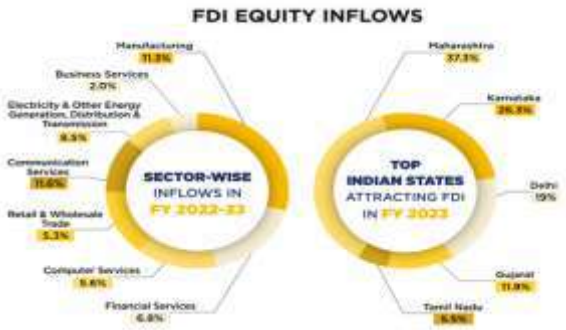

भारत में 2000–01 से 2025–26 तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में दीर्घकालीन रूप से उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। जैसा कि सारणी से स्पष्ट है।

सारणी–2: भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह (वित्तीय वर्ष 2000–01 से 2025–26) (मिलियन डालर में)

क्र0 सं.0	*वित्तीय वर्ष*	*कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह*	*पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत वृद्धि अमेरिकी डालर में)*	*विदेशी संस्थागत निवेशको द्वारा शुद्ध निवेश*
1	*2000-01*	*4,029*	*00.00*	*1,847*
2	*2001-02*	*6,130*	*(+) 52 %*	*1,505*
3	*2002-03*	*5,035*	*(-) 18 %*	*377*
4	*2003-04*	*4,322*	*(-) 14 %*	*10,918*
5	*2004-05*	*6,051*	*(+) 40 %*	*8,686*
6	*2005-06*	*8,961*	*(+) 48 %*	*9,926*
7	*2006-07*	*22,826*	*(+) 155 %*	*3,225*
8	*2007-08*	*34,843*	*(+) 53 %*	*20,328*
9	*2008-09*	*41,873*	*(+) 20 %*	*-15,017*
10	*2009-10*	*37,745*	*(-) 10 %*	*29,048*
11	*2010-11*	*34,847*	*(-) 08 %*	*29,422*
12	*2011-12*	*46,556*	*(+) 34 %*	*16,812*
13	*2012-13*	*34,298*	*(-) 26%*	*27,582*
14	*2013-14*	*36,046*	*(+) 5%*	*5,009*
15	*2014-15*	*45,148*	*(+) 25%*	*40,923*
16	*2015-16*	*55,559*	*(+) 23%*	*-4,016*
17	*2016-17*	*60,220*	*(+) 8%*	*7,735*
18	*2017-18*	*60,974*	*(+) 1%*	*22,165*
19	*2018-19*	*62,001*	*(+) 2%*	*-2,225*
20	*2019-20*	*74,391*	*(+) 20%*	*552*
21	*2020-21*	*81,973*	*(+) 10%*	*38,725*
22	*2021-22*	*84,835*	*(+) 3%*	*-14,071*
23	*2022-23*	*71,355*	*(-) 16%*	*-4,828*
24	*2023-24*	*71,279*	*(-) 0%*	*44,626*
25	*2024-25*	*80,615*	*(+) 13%*	*3,283*
26	*2025-26 दिसम्बर 2025*	*73,314*	*……..*	*-2,912*
कुल योग (अप्रैल, 2000 से दिसम्बर, 2025 तक)		***1,145,226***	**.....**	***279,625***

Source: Department for Promotion of Industry and Internal Trade, quarterly fact sheet. Fact sheet on foreign direct investment (FDI) inflow. From April, 2000 to December, 2025

हालांकि, 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के कारण प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा और अगले कुछ वर्षों में उतार–चढ़ाव देखने को मिला। 2014–15 के बाद "मेक इन इंडिया", "ईज ऑफ डूइंग बिजनेस" जैसे सुधारों के कारण प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में पुनः स्थिर और निरंतर वृद्धि हुई। 2019–20 से 2021–22 के बीच प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ने उच्च स्तर प्राप्त किया, यहाँ तक कि कोविड–19 महामारी के दौरान भी भारत ने मजबूत निवेश आकर्षित किया। हालांकि, 2022–23 में वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के कारण गिरावट आई, लेकिन 2024–25 में पुनः सुधार देखा गया। दूसरी ओर विदेशी संस्थागत निवेशक निवेश अत्यधिक अस्थिर रहा और कई वर्षों

में नकारात्मक भी रहा, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अधिक स्थायी और दीर्घकालीन निवेश का स्रोत है। समग्र रूप से, यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि भारत वैश्विक निवेशकों के लिए एक उभरता हुआ और आकर्षक निवेश गंतव्य बन चुका है।

5.2. वर्ष–वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी प्रवाह : भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह 2000–01 से लगातार परिवर्तनशील लेकिन दीर्घकाल में वृद्धि की दिशा में रहा है। प्रारंभिक वर्षों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अपेक्षाकृत कम था, जैसे 2000–01 में केवल 2,463 मिलियन अमेतिकी डालर था। 2001–02 में इसमें 65 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई, लेकिन 2002–03 और 2003–04 में गिरावट देखी गई, जो वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव दर्शाती है। 2004–05 से 2007–08 के बीच प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में तेज वृद्धि हुई, विशेष रूप से 2006–07 (125 प्रतिशत) और 2007–08 मे 97 प्रतिशत है। यह अवधि भारत में आर्थिक उदारीकरण, निवेश अनुकूल नीतियों और तेज आर्थिक विकास का परिणाम थी। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद 2009–10 और 2010–11 में गिरावट आई। 2011–12 में फिर से 64 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई, लेकिन 2012–13 में पुनः कमी आई। 2014–15 के बाद भारत सरकार द्वारा "मेक इन इंडिया", सुधारात्मक नीतियों और "ईज ऑफ डूइंग बिजनेस" में सुधार के कारण प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में लगातार वृद्धि हुई, और 2019–20 तक यह 49,977 मिलियन अमेतिकी डालर तक पहुँच गया। जैसा कि सारणी से स्पष्ट है। कोविड–19 महामारी के बावजूद 2020–21 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 59,636 मिलियन अमेतिकी डालर तक बढ़ा, जो भारत की निवेश आकर्षण क्षमता को दर्शाता है।

सारणी–3: वित्तीय वर्ष–वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी प्रवाह (मिलियन डालर में)

क्र. सं.	*वित्तीय वर्ष*	प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी प्रवाह की राशि		पिछले वर्ष की तुलना में: वृद्धि (अमेरिकी डालर में)
		(करोड़ रू.में)	(मिलियन अमेरिकी डालर में)	
1	*2000-01*	*10,733*	*2,463*	-------
2	*2001-02*	*18,654*	*4,065*	*(+) 65 %*
3	*2002-03*	*12,871*	*2,705*	*(-) 33 %*
4	*2003-04*	*10,064*	*2,188*	*(-) 19 %*
5	*2004-05*	*14,653*	*3,219*	*(+) 47 %*
6	*2005-06*	*24,584*	*5,540*	*(+) 72 %*
7	*2006-07*	*56,390*	*12,492*	*(+) 125 %*
8	*2007-08*	*98,642*	*24,575*	*(+) 97 %*
9	*2008-09*	*1,42,829*	*31,396*	*(+) 28 %*
10	*2009-10*	*1,23,120*	*25,834*	*(-) 18 %*
11	*2010-11*	*97,320*	*21,383*	*(-) 17 %*
12	*2011-12*	*1,65,146*	*35,121*	*(+) 64 %*
13	*2012-13*	*1,21,907*	*22,423*	*(-) 36 %*
14	*2013-14*	*1,47,518*	*24,299*	*(+) 8%*
15	*2014-15*	*1,81,682*	*29,737*	*(+) 22%*
16	*2015-16*	*2,62,322*	*40,001*	*(+) 35%*
17	*2016-17*	*2,91,696*	*43,478*	*(+) 9%*
18	*2017-18*	*2,88,889*	*44,857*	*(+) 3%*
19	*2018-19*	*3,09,867*	*44,366*	*(-) 1%*
20	*2019–20*	*3,53,557*	*49,977*	*(+) 13%*
21	*2020-21*	*4,42,569*	*59,636*	*(+) 19%*
22	*2021-22*	*4,37,188*	*58,773*	*(-) 1%*
23	*2022-23*	*3,67,435*	*46,034*	*(-) 22%*
24	*2023-24*	*3,67,899*	*44,423*	*(-)3%*
25	*2024-25*	*4,21,929*	*50,018*	*(+)13%*
26	*2025-26 दिस. 2025 तक*	*4,16,709*	*47,874*	---------
कुल योग (अप्रैल, 2000 से दिस., 2025 तक)		***51,86,173***	***776,877***	

Source: Department for Promotion of Industry and Internal Trade, quarterly fact sheet. Fact sheet on foreign direct investment (FDI) inflow. From April, 2000 to September, 2025

हालांकि 2021–22 से 2023–24 के बीच थोड़ी गिरावट देखी गई, जिसका कारण वैश्विक अनिश्चितता और आर्थिक मंदी रहा। 2024–25 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पुनः बढ़कर 50,018 मिलियन अमेरिकी डालर हो गया, जो सुधार

की दिशा को दिखाता है। कुल मिलाकर, अप्रैल 2000 से दिसम्बर 2025 तक भारत में लगभग 776.8 बिलियन अमेरिकी डालर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आया है, जो भारत जैसे देश की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

5.3 देश–वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी प्रवाहः यह सारणी अप्रैल 2000 से जून 2025 तक भारत में विभिन्न देशों से प्राप्त प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी इनफ्लो का विस्तृत देशवार विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत में विदेशी निवेश कुछ प्रमुख देशों में अत्यधिक केंद्रित है, जबकि अन्य देशों का योगदान अपेक्षाकृत कम है। सबसे अधिक निवेश मॉरीशस (24.79 प्रतिशत) और सिंगापुर (23.82 प्रतिशत) से आया है। इन दोनों देशों का संयुक्त योगदान लगभग 48 प्रतिशत है, जो यह दर्शाता है कि भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का बड़ा हिस्सा इन्हीं के माध्यम से आता है। इसका मुख्य कारण इन देशों के साथ भारत के अनुकूल दोहरे कराधान से बचाव का समझौता तथा आसान निवेश संरचना है, जिससे कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इन देशों के जरिए भारत में निवेश करती हैं। तीसरे स्थान पर सयुक्त राज्य अमेरिका (10.10 प्रतिशत) है, जो भारत में प्रत्यक्ष निवेश का एक प्रमुख स्रोत है। इसके बाद नीदरलैंड के (7.16 प्रतिशत) और जापान (6.13 प्रतिशत) आते हैं, जो विशेष रूप से औद्योगिक, विनिर्माण और तकनीकी क्षेत्रों में निवेश के लिए जाने जाते हैं।

सारणी–4: 2000 से जून 2025 तक देश–वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी प्रवाह

क्र. सं.	*देश का नाम*	*प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी प्रवाह की राशि*		*कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी प्रवाह में से प्रतिशत (अमेरिकी डालर में)*
		(करोड़ रू.में)	*(मिलियन अमेरिकी डालर में)*	
1	*मॉरीशस*	*13,72,320.00*	*192,537.99*	*24.79*
2	*सिंगापुर*	*11,34,883.99*	*185,020.61*	*23.82*
3	*सयुक्त राज्य अमेरिका*	*5,60,989.78*	*78,459.07*	*10.10*
4	*नीदरलैंड*	*3,82,994.63*	*55,600.22*	*7.16*
5	*जापान*	*3,11,506.76*	*47,596.3*	*6.13*
6	*यूनाइटेड किंगडम*	*2,17,258.62*	*36,712.29*	*4.73*
7	*सयुक्त अरब अमीरात*	*1,88,976.12*	*25,301.69*	*3.26*
8	*आइलैंड्स*	*1,28,119.62*	*17,608.96*	*2.27*
9	*साइप्रस*	*1,01,680.23*	*16,060.13*	*2.07*
10	*जर्मनी*	*95,262.73*	*15,504.95*	*2.00*
11	*फ्रांस*	*78,094.23*	*12,019.83*	*1.55*
12	*स्विट्जरलैंड*	*76,356.46*	*11,259.11*	*1.45*
13	*दक्षिण कोरिया*	*48,335.79*	*7,004.71*	*0.90*
14	*लक्जमबर्ग*	*39,991.64*	*5,652.15*	*0.73*
15	*हांगकांग*	*31,095.99*	*4,897.08*	*0.63*
16	*स्पेन*	*31,039.77*	*4,326.00*	*0.56*
17	*कनाडा*	*27,363.82*	*4,324.44*	*0.56*
18	*बेल्जियम*	*30,187.85*	*4,199.45*	*0.54*
19	*इटली*	*22,619.94*	*3,657.24*	*0.47*
20	*सऊदी अरब*	*24,412.74*	*3,300.22*	*0.42*

Source: Department for Promotion of Industry and Internal Trade, quarterly fact sheet. Fact sheet on foreign direct investment (FDI) inflow. From April, 2000 to September, 2025

यूरोपीय देशों जैसे यूनाइटेड किंगडम (4.73 प्रतिशत), जर्मनी (2.27 प्रतिशत), फ्रांस (1.59 प्रतिशत) और स्विट्जरलैंड (1.46 प्रतिशत) का भी भारत में महत्वपूर्ण योगदान है। इसके अलावा, सयुक्त अरब अमीरात मे (3.19 प्रतिशत) खाड़ी क्षेत्र का प्रमुख निवेशक है, जो व्यापार और अवसंरचना क्षेत्रों में निवेश करता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि आइलैंड्स (2.27 प्रतिशत) और साइप्रस (2.07 प्रतिशत) जैसे टैक्स हेवन देशों से भी पर्याप्त निवेश आया है, जो अक्सर "रूटिंग" या "राउंड–ट्रिपिंग" के माध्यम से होता है। अन्य देशों जैसे दक्षिण कोरिया, लक्जमबर्ग, हांगकांग,स्पेन, कनाडा,बेल्जियम, इटली और सऊदी अरब का योगदान अपेक्षाकृत कम (1 प्रतिशत से भी नीचे) है, लेकिन ये भी भारत के विविध क्षेत्रों में निवेश को दर्शाते हैं। समग्र रूप से, यह तालिका बताती है कि भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह मुख्यतः वित्तीय केंद्रों और विकसित अर्थव्यवस्थाओं से आता है। साथ ही, यह भारत की वैश्विक निवेश आकर्षण क्षमता, स्थिर आर्थिक नीतियों और बढ़ते बाजार के महत्व को भी उजागर करता है।

5.4 **क्षेत्र–वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी प्रवाहः** यह तालिका अप्रैल 2000 से जून 2025 तक भारत में क्षेत्र वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी इनफ्लो को दर्शाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत में विदेशी निवेश किन–किन

क्षेत्रों में अधिक केंद्रित है और कौन–से सेक्टर निवेशकों के लिए सबसे आकर्षक रहे हैं। सबसे अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सेवा क्षेत्र (16.38 प्रतिशत) में आया है, जिसमें बैंकिंग, बीमा, वित्तीय सेवाएं, आउटसोर्सिंग आदि शामिल हैं। यह भारत की सेवा–आधारित अर्थव्यवस्था की मजबूती को दर्शाता है। इसके बाद कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर (15.63 प्रतिशत) दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है, जो भारत के सुचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल सेक्टर की वैश्विक पहचान और विकास को दिखाता है। तीसरे स्थान पर व्यापार (6.56 प्रतिशत) है, जो भारत के बढ़ते उपभोक्ता बाजार और व्यापारिक गतिविधियों को दर्शाता है। इसके बाद दूरसंचार (5.17 प्रतिशत) और वाहन उद्योग (5.11 प्रतिशत) आते हैं, जिनमें भारी विदेशी निवेश हुआ है।

सारणी–5: 2000 से दिसंबर 2025 तक क्षेत्र–वार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी प्रवाह

क्र. सं.	क्षेत्र का नाम	प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इक्विटी प्रवाह की राशि		कुल का प्रतिशत
		(करोड़ रू.में)	(मिलियन डालर में)	
1	सेवा क्षेत्र	8,39,104.87	127,266.33	16.38
2	कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर	8,77,696.95	121,399.55	15.63
3	व्यापार	3,63,784.44	50,934.59	6.56
4	दूरसंचार	2,42,038.10	40,181.13	5.17
5	वाहन उद्योग	2,64,455.69	39,681.66	5.11
6	निर्माण (बुनियादी ढांचा) गतिविधियां	2,76,849.20	38,265.46	4.93
7	निर्माण विकासः टाउनशिप, आवास, निर्मित बुनियादी ढांचा और निर्माण–विकास परियोजनाएं	1,38,088.81	27,400.55	3.53
8	दवाएं और फार्मास्यूटिकल्स	1,54,388.59	24,812.83	3.19
9	रसायन (उर्वरकों के अलावा)	1,81,978.36	24,436.43	3.15
10	गैर–पारंपरिक ऊर्जा	1,48,954.31	23,961.66	3.08
11	विद्युत	1,24,277.69	20,093.09	2.59
12	होटल और पर्यटन	1,19,407.30	19,142.67	2.46
13	धातु उद्योग	1,21,232.71	18,930.76	2.44
14	विद्युत उपकरण	1,10,459.97	15,856.23	2.04
15	खाद्य प्रसंस्करण उद्योग	92,264.15	13,844.54	1.78
16	अस्पताल और निदान केंद्र	90,215.67	12,726.93	1.64
17	सूचना और प्रसारण (प्रिंट मीडिया सहित)	82,201.29	12,455.88	1.6
18	शिक्षा	78,403.13	11,276.51	1.45
19	परामर्श सेवाएं	81,316.97	11,039.62	1.42
20	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस	62,345.21	8,603.36	1.11

Source: Department for Promotion of Industry and Internal Trade, quarterly fact sheet. Fact sheet on foreign direct investment (fdi) inflow. From April, 2000 to September, 2025

यह भारत में डिजिटल कनेक्टिविटी और ऑटोमोबाइल निर्माण के तेजी से विस्तार को इंगित करता है। इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़े क्षेत्रों में भी अच्छा निवेश देखने को मिलता है। निर्माण (बुनियादी ढांचा) गतिविधियां (4.93 प्रतिशत) और निर्माण विकास (3.53 प्रतिशत) यह दर्शाते हैं कि भारत में शहरीकरण, हाउसिंग और बुनियादी ढांचे के विकास में विदेशी निवेश महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके अलावा, दवाएं और फार्मास्यूटिकल्स (3.19 प्रतिशत), रसायन (उर्वरकों के अलावा) से (3.15 प्रतिशत) और गैर–पारंपरिक ऊर्जा (3.08 प्रतिशत) जैसे क्षेत्र भी महत्वपूर्ण हैं। खासकर नवीकरणीय ऊर्जा में बढ़ता निवेश भारत की सतत विकास की दिशा को दर्शाता है। ऊर्जा और औद्योगिक क्षेत्रों जैसे विद्युत (2.59 प्रतिशत), धातु उद्योग मे (2.04 प्रतिशत) और पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस (1.11 प्रतिशत) में भी निवेश हुआ है, जो औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक हैं। वहीं होटल और पर्यटन (2.46 प्रतिशत), अस्पताल और निदान केंद्र (1.64 प्रतिशत) और शिक्षा (1.45 प्रतिशत) जैसे सामाजिक और सेवा क्षेत्र भी निवेश आकर्षित कर रहे हैं। समग्र रूप से, यह तालिका दिखाती है कि भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का मुख्य फोकस सेवा, सुचना प्रौद्योगिकी, व्यापार और इंफ्रास्ट्रक्चर पर है, जबकि मैन्युफैक्चरिंग, ऊर्जा और सामाजिक क्षेत्रों में भी संतुलित निवेश हो रहा है। यह भारत की विविध और तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था को दर्शाता है, जो वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है।

इन सुझावों का उद्देश्य एक ऐसा अनुकूल माहौल बनाना है, जो निवेश को बढ़ावा दे, बाधाओं को कम करे और विदेशी निवेशकों में विश्वास जगाए। इन उपायों को लागू करने के लिए विभिन्न सरकारी विभागों, नियामक

निकायों और हितधारकों के बीच समन्वय की आवश्यकता होती है, ताकि निवेश के लिए एक अनुकूल माहौल बनाया जा सके और भारत को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए एक आकर्षक गंतव्य के रूप में स्थापित किया है।

निष्कर्ष एवं सुझाव : उपर्युक्त विश्लेषण से हम यह कह सकते हैं कि भारत के आर्थिक विकास मे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रभाव काफी महत्वपूर्ण हो सकता है। आर्थिक विकास को गति देने, उत्पादकता बढ़ाने और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एक अहम भूमिका निभाता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह भारतीय अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त निवेश पूंजी लाता है। यह निवेश पूंजी में वृद्धि में योगदान देता है। पूंजी निर्माण, जो आर्थिक विकास के लिए जरूरी है। वर्तमान मे उद्योगों के विस्तार, नए व्यवसायों की स्थापना और बुनियादी ढांचे के विकास में मदद करता है, ये सभी आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं और सकल धरेलु उत्पाद में योगदान करते हैं। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अपने साथ विदेशी कंपनियों से उन्नत तकनीक, प्रबंधकीय विशेषज्ञता और बेहतरीन कार्यप्रणालियाँ लाता है। तकनीक का यह हस्तांतरण और ज्ञान का प्रसार उत्पादकता बढ़ा सकता है, उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार कर सकता है, और घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ा सकता है। बेहतर उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता से उच्च आर्थिक उत्पादन और टिकाऊ आर्थिक विकास हो सकता है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह से प्राप्तकर्ता देश में रोजगार सृजन और रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं। भारत में अपना परिचालन स्थापित करने या उसका विस्तार करने वाली विदेशी कंपनियाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा करती हैं, जिससे बेरोजगारी दर कम होती है और जीवन स्तर में सुधार होता है। रोजगार के बढ़ते स्तर से उपभोक्ता खर्च बढ़ता है और समग्र आर्थिक विकास होता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का निर्यात और व्यापार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। विदेशी कंपनियाँ अक्सर भारत में निर्यात–उन्मुख उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करती हैं, और देश के कुशल कार्यबल तथा लागत संबंधी लाभों का फायदा उठाती हैं। इससे निर्यात बढ़ सकता है, विदेशी मुद्रा की कमाई बढ़ सकती है, और व्यापार घाटा कम हो सकता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आयात प्रतिस्थापन में भी योगदान दे सकता है, क्योंकि घरेलू उत्पादन आयात की जगह ले लेता है, जिससे व्यापार संतुलन में और सुधार होता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह बुनियादी ढांचे के विकास में मदद कर सकता है, विशेष रूप से परिवहन, ऊर्जा और दूरसंचार जैसे क्षेत्रों में। बेहतर बुनियादी ढांचा न केवल व्यावसायिक कार्यों को आसान बनाता है, बल्कि अतिरिक्त निवेश को भी आकर्षित करता है, क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देता है, और समग्र आर्थिक विकास को मजबूत करता है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भारत के आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभाव की सीमा और उसका पैमाना विभिन्न कारकों के आधार पर अलग–अलग हो सकता है, जिनमें निवेश की गुणवत्ता, नीतिगत माहौल, संस्थागत ढांचा और अर्थव्यवस्था की अवशोषण क्षमता शामिल हैं। सहायक नीतियों को लागू करना, एक अनुकूल व्यावसायिक माहौल बनाना, और उच्च–गुणवत्ता वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आकर्षित करना, भारत के आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के सकारात्मक प्रभाव को अधिकतम करने की कुंजी है। भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह बढ़ाने के लिए, कई रणनीतियाँ और उपाय लागू किए जा सकते हैं।

- नौकरशाही प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित और सरल बनाएँ, विनियामक बोझ कम करें, और व्यावसायिक कार्यों में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाएँ। ऐसे सुधार लागू करके एक व्यवसाय–अनुकूल माहौल बनाना, जिससे विदेशी निवेशकों के लिए भारत में अपना व्यवसाय स्थापित करना और चलाना आसान हो जाए, लाल फीताशाही को खत्म करके प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रवाह को काफी हद तक आकर्षित कर सकता है।
- परिवहन, लॉजिस्टिक्स, ऊर्जा और डिजिटल कनेक्टिविटी सहित बुनियादी ढाँचे के विकास में निवेश करें। विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाला बुनियादी ढाँचा अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह व्यावसायिक कार्यों के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान करता है और कुशल आपूर्ति श्रृंखलाओं को सक्षम बनाता है।
- विदेशी निवेशकों को निश्चितता प्रदान करने के लिए पारदर्शी और स्थिर कर नीतियाँ लागू करें। कर दरों को युक्तिसंगत बनाएँ और कर अनुपालन में आने वाली जटिलताओं को कम करें। इसके अतिरिक्त, विदेशी निवेशकों में विश्वास जगाने के लिए निवेश नीतियों में निरंतरता और पूर्वानुमान सुनिश्चित करें।
- शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करें ताकि एक कुशल कार्यबल तैयार किया जा सके जो विदेशी निवेशकों की मांगों को पूरा कर सके। नवाचार और प्रौद्योगिकी–संचालित विकास को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान और विकास गतिविधियों तथा उद्योगों और अनुसंधान संस्थानों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करें।
- उच्च विकास क्षमता वाले प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करें और उन क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई नीतियाँ और प्रोत्साहन विकसित करें। विनिर्माण, बुनियादी ढाँचा, प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा और स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए कर लाभ, अनुदान और सब्सिडी जैसे क्षेत्र–विशिष्ट प्रोत्साहन प्रदान करें।

❖ विदेशी निवेशकों के हितों की रक्षा करने तथा नवाचार और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को प्रोत्साहित करने के लिए मजबूत बौद्धिक संपदा अधिकार सुरक्षा सुनिश्चित करें। प्रवर्तन तंत्र को सुदृढ़ करें और बौद्धिक संपदा अधिकार प्राप्त करने तथा उनकी रक्षा करने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करें।

बुनियादी ढाँचे के विकास परियोजनाओं के लिए विशेषज्ञता और संसाधनों का लाभ उठाने हेतु सार्वजनिक–निजी भागीदारी के माध्यम से सरकार और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करें। सार्वजनिक–निजी भागीदारी आकर्षक निवेश के अवसर पैदा करने में मदद कर सकती है और विदेशी निवेशकों के लिए एक स्थिर ढाँचा प्रदान कर सकती है।

स्रोत एवं संदर्भः

1. अब्दुलहामिद सुकर(2007). आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रभावः उप–सहारा अफ्रीका का मामला, साउथ वेस्टर्न इकोनॉमिक रिव्यू, 61–73 (2007)
2. अभय प्रताप सिंह आदि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 10 (8), 360–364 (2022
3. भावना कुन्नप्पिल्ली शंकरन, जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च, 6 (1), 461–468 (2019)
4. भव्य मल्होत्रा, ग्लोबल जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 4 (1), 17–23 (2014)
5. कार्लोस एनसिनास फेरर आदि, प्रोसीडिया इकोनॉमिक्स एंड फाइनेंस, 24, 198–207 (2015)
6. एलेना पेलिनेस्कु और मैग्डालेना राडुलेस्कु, रोमानियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक फोरकास्टिंग, 4, 153–169 (2009)
7. खमीस हरेब आदि, इन्वेस्टमेंट मैनेजमेंट एंड फाइनेंशियल इनोवेशन, 12 (3), 132–141 (2015)
8. लीना बकावदाह और ताहर तायची, पालार्च्स जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजी ऑफ इजिप्ट, 18 (13), 493–498 (2021)
9. माथा और मथियाजहागन,"भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रभावः एक क्षेत्रीय स्तर का विश्लेषण" (इंस्टीट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्टडीज वर्किंग पेपर, 2005) 1–23.
10. मोहम्मद जैन खान और राणा जहरा मसूद, Amity Journal of Management,10 (1),40–42 (2022)
11. नाजेह बौचौचा और वालिद अली, "आर्थिक विकास पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रभावः ट्यूनीशिया से साक्ष्य", Journal of Smart Economic Growth,4 (3), 23–46 (2019)
12. नवीन कुमार शर्मा और अन्य, Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, 6 (6),36–42 (2019)
13. नलैंडू मामिंगी और करीम मार्टिन, "विकासशील देशों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और विकासः Organisation of Eastern Caribbean States के देशों से साक्ष्य", (Cepal Review) 2018) 80–98.
14. साई रोहित कुमार रेड्डी बोब्बा, International Journal of Creative Research Thoughts, 10 (2), 904–911 (2022)
15. सस्वता चौधरी और अन्य, Review of Market Integration,12(1), 51–69(2020)
16. https://www.dpiit.gov.in
17. Reserve Bank of India. (2023). Annual Report 2022–23. Mumbai.

=====

आलेख उद्धरित करें :	कुमार, मुकेश (2026)। भारत के आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रदर्शन का अध्ययन। बुंदेलखंड जर्नल ऑफ अकादमिक रिसर्च (बीजेएआर), वॉल्यूम–2, अंक–2, अप्रैल–जून, 2026, पृष्ठ 31–41। https://doi.org/10.5281/zenodo.21787693